कितना परिवर्तन ला पाएगी कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा

हरियाणा में कांग्रेस के कार्यक्रम को भीड़ के हिसाब से काफी सफलता मिली है, लेकिन क्या इससे लोकसभा में सीटें भी मिलेंगी ?

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा चुनाव में जितना मजबूत माना जा रहा है, ग्राउंड जीरो पर वह उतनी ही कमजोर है। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की करनाल, लाडवा, यमुनानगर में हाल ही में हुई रैलियां और कांग्रेस के विभिन्न नेताओं द्वारा हाल ही में निकाली गई परिवर्तन यात्रा में जिस तरह भीड़ आई है, वह भाजपा को जरूर चिंतित कर रहा होगा। हालांकि गोदी मीडिया के लोग हरियाणा में भी कम नहीं हैं तो ऐसे में गोदी मीडिया का पूरा ध्यान कांग्रेस की आपसी गुटबाजी पर ज्यादा रहा लेकिन भीड़ पर किसी की नजर नहीं थी।

यमुनानगर शहर के लोग राहुल गांधी के स्वागत में चिलचिलाती धूप में सड़क के दोनों तरफ खड़े नजर आए। अगर में से कांग्रेस कार्यकर्ताओं को निकाल दिया जाए तो भी यह संख्या बताती है कि राहुल की लोकप्रियता का ग्राफ बढ़ा है। कुछ ऐसे ही हालात करनाल और लाडवा में रहे। लोग पुलिस का घेरा तोड़कर राहुल से मिलने को बेताब दिखे।

परिवर्तन बस यात्रा

कांग्रेस के हरियाणा प्रभारी गुलाम नबी आजाद हाल ही में एक बस लेकर निकले। इस बस को पूरे राज्य में घुमाया गया। कांग्रेस चूंकि बड़ी पार्टी है और हरियाणा में सत्ता में रही है तो उसके कई गुट होना स्वाभाविक है। आरएसएस के एजेंडे पर चलने वाले अखबारों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने अखबारों में कांग्रेस की गुटबाजी को लेकर खबरों का अंबार लगा दिया, इसके बावजूद भारी भीड़ को इसमें पहुंचने से रोक नहीं सकी।

करनाल, लाडवा, कुरुक्षेत्र और यमुनानगर के कांग्रेसियों को नजरन्दाज करके अगर बात सिर्फ फरीदाबाद और गुड़गांव की हो, तो भी इन दोनों ही शहरों में परिवर्तन यात्रा में लोग भारी तादाद में उमड़े। मुस्लिम बहुल इलाकों में जिस तरह इस बस यात्रा का स्वागत हुआ, उससे कांग्रेस आला कमान के प्रतिनिधि भी संतुष्ट नजर आए। उन्हें इस इलाके में ऐसी तादाद की उम्मीद नहीं थी। फरीदाबाद के सबसे बड़े गांव तिगांव में भी इस बस यात्रा ने सभी का ध्यान खींचा।

हुड्डा को कमान देना मजबूरी

हरियाणा में पार्टी को लोकसभा चुनाव मैदान में उतारने की जिम्मेदारी पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा को देकर कांग्रेस ने समझदारी का काम किया है। कांग्रेस में फिलहाल हुड्डा से मजबूत जाट नेता अभी कोई नहीं है। जिस तरह सामने से तीन पार्टियां याना भाजपा, इनैलो और जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) जाट राजनीति ही कर रही हैं, उसके हिसाब से कांग्रेस को हुड्डा का लाना ज्यादा बेहतर कदम है। हरियाणा में जाट भाजपा से नाराज हैं, यह कोई छिपी बात नहीं है। इनैलो बंटवारे के बाद कमजोर पड़ गई है। जेजेपी दमखम दिखा तो रही है लेकिन इस चक्कर में वह कभी आम आदमी पार्टी से तो कभी भाजपा से समझौते के लिए पींगे बढ़ाती नजर आती है। अगर जाटों को यह बात समझ आ गई तो जेजेपी की भ्रूण हत्या तय है। अभी जेजेपी इस तरह की छवि नहीं बना पाई है कि वह ताऊ देवीलाल की तरह 36 बिरादरियों को लेने की बात कहे। इस तरह फिलहाल मुकाबले में कांग्रेस और भाजपा ही हैं। लोकसभा चुनाव में जेजेपी जितना भी वोट काटेगी वह या तो इनैलो का होगा या फिर भाजपा का। बहुत ज्यादा उम्मीद है कि हुड्डा के नेतृत्व में जाटों की पसंद कांग्रेस ही बनेगी। हालांकि यह सिर्फ एक विश्लेषण भर है और जरूरी नहीं कि आगे की राजनीति इसी तरह करवट से।

हालांकि जींद विधानसभा उप चुनाव कांग्रेस बहुत बुरी तरह हारी है और जेजेपी ने इनैलों के वोटों पर पूरी तरह कब्जा कर लिया। लेकिन जींद उपचुनाव को पूरे हरियाणा के साथ जोड़कर नहीं देखा जा सकता। लोकसभा चुनाव में मतदाता सत्ता परिवर्तन के लिए वोट करता है जबकि उपचुनाव एक तरह की खानापूरी न सिर्फ मतदाताओं की ओर से बल्कि पार्टियों की ओर से भी की जाती है।

जींद उपचुनाव का नतीजा आने के बाद हरियाणा में कांग्रेस को खारिज किए जाने की बातें भाजपा की ओर से प्रचारित की गईं लेकिन ग्राउंड जीरो पर जिस तरह कांग्रेस को समर्थन मिल रहा है, उससे लगता है कि उनका मकसद कामयाब होगा।

जन-धन की बर्बादी का नमूना है सेक्टर 14 की मार्केट

फ़रीदाबाद (म.मो.) जनता के खून पसीने को बर्बाद करने में यूं तो कोई भी महकमा पीछे रहने को तैयार नहीं; लेकिन 'हूडा'(हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण) विकास के नाम पर कैसे बर्बादी कर रहा है उसका एक छोटा सा नमूना सेक्टर 14 की मार्केट में देखा जा सकता है। करीब 40 वर्ष पूर्व 'हूडा' ने सभी सेक्टरों की तरह यहां 7 शॉप कम फ्लैट व उनके पीछे की तरफ़ 13 छोटी दुकाने बना कर खड़ी की थीं। शॉप कम फ्लैट्स में कुछ वर्ष तक तो ऊपर सरकारी अधिकारी रहते रहे और नीचे के तल पर कोई सरकारी दफ़्तर या स्टोर आदि रहे। इन फ्लैटों में तो एक वक्त बलजीत सिंह संधू (रिटायर्ड डीजीपी)भी रहे थे, जब वे यहां बतौर एएसपी तैनात होकर आये थे। इनमें कई मैजिस्ट्रेट व अधिकारी रह चुके हैं। परन्तु आज इन फ़्लैटों की हालत इतनी जर्जर व खंडर हो चुकी है कि एक को छोड़ का बाकी सब वीरान पड़े हैं। एक-दो की तो ऊपरी मंजिलों की मुंडेर की हालत इतनी जर्जर है कि कभी भी गिर कर किसी दुर्घटना का कारण बन सकती हैं।

इसी तरह पीछे की तरफ़ 10 गुणे 7 फ़ीट की 13 दुकानें हैं जिनके आगे बरामदा भी है इनमें से 2 दुकाने 'हूडा' ने करीब 35 वर्ष पूर्व किराये पर दी थीं। लेकिन आज से करीब 20 वर्ष पूर्व 'हूडा' ने इन्हें जबरन गुंडागर्दी से खाली करा लिया जबकि वे बाकायदा समय पर किराया अदा करते आ रहे थे। दोनों किरायेदारों ने पहले निचली कोर्ट से फ़िर सैशन कोर्ट से केस जीत लिया। उसके बावजूद एक साल तक लटकाने के बाद एक को तो दुकान देकर 12 लाख वसूल लिये जबकि दूसरे को अब भी लटकाये हुए हैं, कहते हैं हाईकोर्ट में अपील करेंगे। ये दोनों दुकानदार ग़रीब मेहनतकश हैं। एक बढईगिरी तो दूसरा नाई का काम करता है। इन दोनों ग़रीबों ने तो लड़ाई लड़ी अपने खर्चे पर और 'हूडा' के बाबुओं के लिये मुकदमा सरकारी पैसे पर एय्याशी करना होता है। इसलिये अपील-दर-अपील चलती रहती है। कोर्टों का बोझ बेवजह बढ़ता रहता है। मुकदमा हारने पर यदि कोर्ट इन बाबुओं को भी सज़ा दे और सारा हर्जा-खर्चा इनसे वसूल करे तो जनता दुखी होने से बच जाये और अदालतों का बोझ घट जाये।

खाली पड़ी रहने व देख-रेख के अभाव में ये 13 दुकाने भी खंडर होती जा रही हैं। इनकी छतों पर घास खड़ी है बरसाती पानी चू कर नीचे गिरता है, छतों का सरिया गल चुका है।

जनता का करोड़ों रुपया खर्च कर के ये इमारतें तो बना दीं, लेकिन न तो इन्हें किराये पर दिया गया और न ही बेचा गया। जो दो दुकानें किराये पर दी भी थीं उनको भी मुकदमेबाज़ी में उलझा दिया। आज भी इन खंडरों को बेचा जाय तो पचासों करोड़ सरकारी कोष में आ सकता है। यह खिलवाड़ एक अकेले सेक्टर 14 में ही नहीं बल्कि सेक्टर 7, 16ए, 17 सहित अनेकों सेक्टरों में

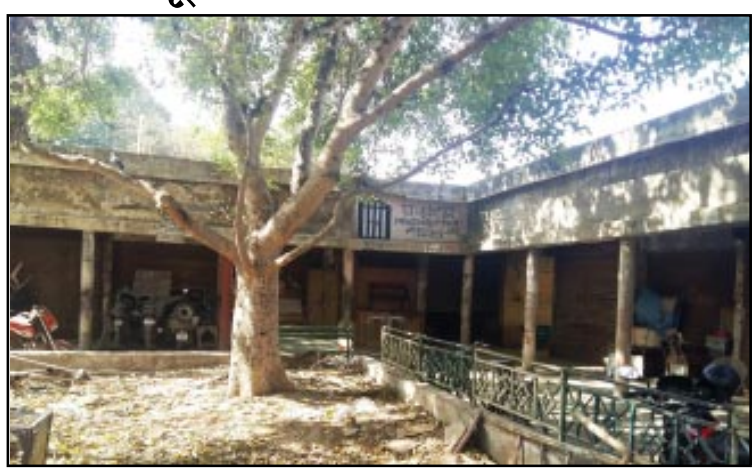

हो रहा है। कई जगह तो 'हूडा' की इमारतों पर लोगों ने अवैध कब्ज़े भी कर लिये हैं तो कई जगह 'हूडा' कर्मचारी अवैध रूप से किराया वसूली भी कर रहे हैं।

एक मात्र शौचालय भी तोड़ मारा

सेक्टर 14 की इसी मार्केट में एक शौचालय था। देख-भाल की अभाव में उसकी छत बरसात में चूने लगी तो गत वर्ष 'हूडा' ने लाखों रुपया खर्च करके उसकी मुरम्मत कराई थी। मुरम्मत ऐसी कराई कि छत की हालत बद से बद्तर हो गयी। जाहिर है मुरम्मत का पैसा अधिकारी डकार गये। इन हालात में आरडब्लूए ने इसकी छत को करीब एक माह पहले तोड़ा था। नई छत बनाने के नाम पर फ़िलहाल वहां शटरिंग खड़ी है जिस पर लेंटर डलेगा। बताया जा रहा है कि स्थानीय विधायक एवं मंत्री विपुल गोयल के आशीर्वाद से 25 लाख में बनने वाला यह शैचालय अपने आप में अद्भूत होगा। इस पंचतारा शौचालय के बनने में अभी कम से कम 3 माह का समय लगना बताया जाता है।

विदित है कि इससे पूर्व मंत्री जी ने ही एक शौचालय मार्केट के बिल्कुल सामने सड़क के किनारे अवैध रूप से बनवाना शुरू कर दिया था। उसका विरोध सेक्टर वासियों ने किया था जिसका प्रकाशन 'मज़दूर मोर्चा' में किया गया था। उसके बाद उसे रोक दिया गया था।

पुलिस की लूट कमाई के लिये क्राइम होना जरूरी, यह जितना अधिक होगा कमाई भी उतनी ही बढेगी

फ़रीदाबाद (म.मो.) गतांक (24-30 मार्च)में 'पुलिस लूटमारी में व्यस्त जनता गुंडागर्दी से त्रस्त' शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया था। इसमें बताया गया था कि किस प्रकार बड़खल गांव के गुंडागिरोह ने एसजीएम नगर के उन लोगों पर जबरदस्त हमला कर दिया था जिन्होंने लड़की छेड़ने वाले दो लड़कों को दबोच कर पुलिस के हवाले कर दिया था। हमले में गुंडागिरोह के पचासों लड़कों ने न केवल गली में खड़ी कारों आदि को जलाया बल्कि एक वाहन को तो घर के भीतर घुस कर जला डाला था। हन्नी नामक दुकानदार की दुकान में घुस कर न केवल उसे पीटा बल्कि उसका 35 हज़ार का गल्ला भी हाथ से छीन लिया था।

थाना एसजीएम नगर व अनेकों पुलिस चौकियों से घिरे घटना स्थल पर पुलिस लकीर पीटने के लिये तब पहुंची थी जब गुंडागिरोह अपना 'काम' करके आराम से चला गया। मौके पर पहुंचने के बाद भी पुलिस ने कोई विशेष कार्यवाही करने के बजाय रो-पीट कर एफ़आईआर नं. 122 दर्ज की रात के 12 बजे।

दिनांक 17 मार्च की घटना के बावजूद पुलिस ने खबर लिखे जाने तक एक भी गिरफ़्तारी नहीं की है, हां मजबूरी में उन दो लड़कों को जरूर गिरफ़्तार करना पड़ा जो पब्लिक ने उन्हें मौके से पकड़ कर दिये थे। पुलिस गुंडागर्दी करने वालों के साथ सख्ती से निपटने की अपेक्षा सौदेबाज़ी करने में जुटी है। पहले सौदे में पुलिस ने दोषियों की शिकायत पर ही एक एफ़आईआर शिकायतकर्ताओं के विरुद्ध दर्ज कर ली। इसमें तीन तो ऐसे नामजद किये गये हैं जो मौका-ए-वारदात से 5-10 किलोमीटर दूर अपने किसी कार्य में व्यस्त थे। इस तरह केस दर्ज करने से जहां शिकायतकर्ता कमज़ोर पड़ने लगता है वहीं दोषी पक्ष का हौंसला बढने लगता है और वह मजबूत होता जाता है।

दूसरी सौदेबाज़ी यह चल रही है कि दो कठोर धारायें 379 बी व 436 को हटाने अथवा लगाये रखने के लिये। मजे की बात तो यह है कि पुलिस की बातचीत दोनों पक्षों से चल रही है। एक पक्ष से धारायें हटाने के लिये तो दूसरे पक्ष से धारायें न हटाने के लिये सौदेबाज़ी चल रही है। यह सौदेबाज़ी 4 से 10 लाख तक की चल रही है। इसी चक्कर में अब तक कोई गिरफ़्तारी नहीं की गयी है। एक और मज़ेदार बात यह भी है कि यदि दोनों पक्ष आपस में समझौता कर भी लें तो पुलिस तब तक केस खत्म नहीं करेगी जब तक उन्हें मोटी 'फ़ीस' न मिल जाये।

लड़कियों से छेड़छाड़ को पुलिस कोई गंभीर तो क्या साधारण अपराध भी नहीं मानती। इसलिये यह लगातार बढ़ता जाता है। लेकिन यही छोटा अपराध जब गंभीर से गंभीरतम बन जाता है तो फ़िर पुलिस की मौज बन जाती है, दोनों तरफ़ से उस पर धन बरसने लगता है। इसी लिये पुलिस हर छुट-मुट अपराध को बड़ा होने का मौका देती है। बड़े अपराध न हों तो पुलिस की कमाई कहा से होगी और कमाई नहीं होगी तो पट्टी कल्याण में संघ का व रोहतक में भाजपा का भव्य दफ़्तर कैसे बनेगा? इसके अलावा नेताओं की जायदादें कैसे बनेंगी व चुनाव खर्च के लिये करोड़ों कहां से आयेंगे?

पवन जिंदल का भाई मदन भी .....

पेज एक का शेष

था। ढाबे को अपना आधार ठिकाना बनाकर मदन ने अपने भीतर छिपी ठगी व जोड़-तोड़ की कला का इस्तेमाल करना शुरू किया। धीरे-धीरे इसने अपने छोटे भाई पवन व एक अन्य को भी बुला लिया। संघ की शाखाओं से जुड़े होने के कारण पवन शीघ्र ही अपनी 'कलाकारी' के बल पर हरियाणा आरएसएस का मुखिया हो गया। बस फ़िर क्या था, बिल्ली भागों छीका टूटा, राज्य में संघ की सरकार बन गयी। तमाम भ्रष्ट, निकम्मे व चापलूस अधिकारी जिंदल भाईयों के तलवे चाटने लगे। ये लोग भी उन्हीं अधिकारियों को अधिक पसंद करने लगे जो जनता से लूट कर इन्हें अधिकाधिक परोसते, जिसने भी इसमें कुछ कमी की उसको तुरंत बदलाव दिया जाने लगा।

अपने राजनीतिक प्रभाव के चलते इन भाईयों ने वैट और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की भी चोरी बड़े पैमाने पर शुरू कर दी। उन सरकारी अफ़सरों की भला क्या मजाल जो इन्हें छेड़ पाते जो खुद अपनी लूट कमाई के लिये गुड़गांव में तैनात रहना चाहते थे। लिहाज़ा आज इन पर करोड़ों रुपये की टैक्स देनदारी बकाया खड़ी है। तथाकथित देशभक्तों की इस सरकार के रहते इन नकली देशभक्तों को कोई खतरा भी नहीं है। इसलिये ये लोग इस सरकार को बनाये रखने के लिये हर संभव प्रयास करने में जुटे हैं।

अपनी लूट कमाई के पैसे को सुरक्षित रखने का एक ठिकाना इन्होंने निर्मल मिंडा को बनाया है। मिंडा की एक बेटी मदन के बेटे से व दूसरी पवन के बेटे से ब्याही है। ऐसे में दोनों भाईयों के लिये धन सम्पत्ति आदि रखने को मिंडा एक भरोसेमंद ठिकाना है। अपनी अधिकांश सम्पत्तियों को ये लोग मिंडा के नाम पर ही बड़े गुप-चुप तरीके से कराते जा रहे हैं। ऐसे में जो भी लेनदार इनसे मांग करते हैं ये हाथ झाड़ कर खड़े हो जाते हैं और कहते हैं कि उनके पल्ले तो कुछ है ही नहीं। मिंडा भी कोई छोटा-मोटा आदमी नहीं है। उसका भी अच्छा-खास औद्योगिक कारोबार है।

मदन का एक बेटा विवेक जो मिंडा की बेटी परिधि से ब्याह रखा है, गुड़गांव के डीएलएफ़ के मैगनोलिया के आलीशान फ्लैट में रहता है। इनके शाही ठाठ-बाठ का अंदाज़ा इनकी करोड़ों रुपये की कारों व घर में मौजूद 4 नौकरों से लगाया जा सकता है। साल में कम से कम 3-4 बार देशी-विदेशी भव्य पर्यटक स्थलों का दौरा जरूर करते हैं। दूसरा बेटा अभिषेक की पत्नी श्रुति प्रकाश जो बिहार से है, के विरुद्ध चेक बाऊंस का केस चल रहा है। कोर्ट द्वारा इन्हें गिरफ़्तार कर जेल भेजने का आदेश दिये जाने के बावजूद पुलिस ने उसे कोर्ट से भाग जाने का मौका दिया। वह अभी तक भगोड़ी चल रही है। लेकिन इनकी मौज-मस्ती व ऐय्याशी में कोई कोर कसर नहीं है।

उक्त तथ्यों के अलावा और भी बहुत कुछ ऐसे काले कारनामे इन भाईयों ने कर रखे हैं जो मोदी व खट्टर के 'न खाऊंगा न खाने दूंगा' जुमले की पोल खोलते हैं। सरकार बदलने पर वे सब घोटाले भी सामने आयेंगे। तभी पता चलेगा कि ये विदेशों की मार्फ़त कैसे काले धन को सफ़ेद करते आये हैं।